Vol 5 Issue 6 Dec 2015

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 3.4052(UIF) Volume - 5 | Issue - 6 | Dec - 2015

GRT Golden Research Thoughts

नारी के विकासशील चरित्र का ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में मूल्यांकन

मोनिका घुल्ला
सहायक प्रो., डी.ए.वी कॉलेज, अबोहर.

सारांश–

समाज में नारी बहुरूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत होती थी,होती है व होती रहेगी।कभी माँ,कभी पत्नी,कभी प्रेमिका,कभी बहन,कभी भाभी के रूप में।इस रूप वैविध्य के अतिरिक्त नारी की भूमिका में भी विविधता परिलक्षित हो रही है।क्योंकि एक स्त्री स्त्रोतस्विनी के समान बहुरूपा लहरों को अपने आंचल में समेटे हुए है।जिस प्रकार एक स्त्रोतस्विनी अपने कूल किनारें की सीमा में बंधी विविध लहरों को अपने आंचल में समेटे रहती है,बिल्कुल उसी प्रकार स्त्री सामाजिक नियमों के कूल में बंधी अपने रूप वैविध्य का निर्वहन करती है।प्राचीन काल की सम्माननीय नारी आधुनिक काल में शोषण का शिकार होती चली गई।पर इतने शोषण से त्रस्त होने के पश्चात उसने समाज में अपनी अनिवार्य भूमिका को प्रमाण के साथ स्थापित किया।इंदिरा गांधी,कल्पना चावला,सुनीता विलियम्स,सुषमा स्वराज,स्मृति ईरानी आदि नारियां नारी विकास की सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करती है।26 जनवरी की परेड का विषय महिला सशक्तिकरण, व बैराक ओबामा के गार्ड ऑफ ओनर का नेतृत्व एक वायु येना महिला कमांडर द्वारा किया गया।जो नारी शक्ति का यथार्थ उआहरण है। भले ही आज भी बहुत स्थानों पर नारी शोषण का शिकार है,परन्तु वह दिन दूर नही जब नारी अपनी अस्तित्व की चमक से अपनी सफलता की किरणों को विकीर्ण कर समाज में अपनी भूमिका की अनिवार्यता को प्रमाण के साथ स्थापित करेगी।

बीज शब्द–नारी,विकासशील,ऐतिहासिक

प्रस्तावना –

" बिखरों तुम नयी मुस्कान फिर जग में सवेरा हो,
घृणा का पाप धोकर ,स्नेह धारा में नहाओं तुम,
पुरानी लीक पर चलना तुम्हें शोभा नहीं देता,
नए विश्वास लेकर पथ नया बनाओं तुम।"

इसी विचारधारा को धारण किए हुए नारी अपने अस्तित्व के खोज के लिए नव्य विकासशील मार्ग की ओर चल पड़ी है।समाज में नारी बहुरूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत होती थी,होती है व होती रहेगी।कभी माँ,कभी पत्नी,कभी प्रेमिका,कभी बहन,कभी भाभी के रूप में।इस रूप वैविध्य के अतिरिक्त नारी की भूमिका में भी विविधता परिलक्षित हो रही है।क्योंकि एक स्त्री स्त्रोतस्विनी के समान बहुरूपा लहरों को अपने आंचल में समेटे हुए है।जिस प्रकार एक स्त्रोतस्विनी अपने कूल किनारें की सीमा में बंधी विविध लहरों को अपने आंचल में समेटे रहती है,बिल्कुल उसी प्रकार स्त्री सामाजिक नियमों के कूल में बंधी अपने रूप वैविध्य का निर्वहन करती है।प्राचीन काल से आधुनिक काल तक समाज में स्त्री की भूमिका में परिवर्तन हो रहे है।परन्तु इन परिवर्तनों के कारण स्त्री अपनी भूमिका को विकसित करने में प्रयत्नबद्ध है।भले ही समाज में नारी की भूमिका बढ़ रही है परन्तु फिर भी नारी पुरुष के समानाधिकार प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है।

प्रारम्भ में जब मानव का उद्‌भव हुआ था,तब स्त्री–पुरुष की भूमिका में कोई अन्तर नही था।मातृसत्तात्मक परिवार होने के कारण नारी की स्थिति सम्माननीय थी।परन्तु जैसे ही यह समाज पितृसत्तात्मक समाज में परिवर्तित हो गया ,नारी की स्थिति भी शोचनीय हो गई।परन्तु नारी की स्थिति सदैव शोचनीय नही थी।वैदिक काल में नारी को वेदों की शिक्षा दी जाती थी।उनका समाज में सम्मान व आदर था।उस समय शादियां स्वयंवर अर्थात नारी की इच्छा से सम्पन्न होती थी।स्वयं मनु भी नारी की प्रशंसा में कहते है–

"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता।"

द्वापर युग तक नारी को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त था।बौद्ध काल तक आते–आते नारी की दशा अत्यंत शोचनीय थी।स्त्रियों को सामान्य रूप से रहने का अधिकार समाप्त प्रायः था।उनकी जगह एवं उपयोग निश्चित कर दिए गए थे।मुगलकाल ने तो औरतों को पर्दो के पीछे धकेल दिया था।शिक्षा,धर्म,राजनीति,सामाजिक व आर्थिक क्षेत्रों से स्त्री को ऐसे अलग कर दिया गया था जैसे दूध से मक्खी।ब्रिटिश काल में औरतों के मामले में भी पश्चिमीकरण का विशेष प्रभाव न हो सका।बाल विवाह,सती प्रथा,कन्या वध व दहेज प्रथा जैसी कुप्रथाएं नारी जाति को अस्तित्व को नष्ट करने में रत हो गई थी।परन्तु ब्रिटिश काल में आधुनिक शिक्षा का प्रचार हुआ।स्त्रियों ने शिक्षा के लिए घर से बाहर कदम रखना शुरू कर दिया था।तब पुरुषसत्तात्मक समाज ने हया ,शर्म व लज्जा के गतिरोधकों के माध्यम से नारी की विकास गति को अवरूद्ध करना चाहा।परन्तु नारी एक ऐसी शक्ति है जो इन गतिरोधकों का सामना व अपनी सीमाओं का निर्वहन करती हुए भी प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होती रही।अपाला और घोषा उस समय की शिक्षित महिलाएं है जिन्होने अपने व्यक्तित्व के माध्यम से नारियों को शिक्षा अर्जित करने की प्रेरणा दी।क्योंकि शिक्षा ही नारी अस्तित्व को अंधकार के गर्त से निकाल सकता था।स्वतंत्रता सेनानी रानी लक्ष्मीबाई की भूमिका का इतिहास भी साक्ष्य है।तभी तो सुभद्रा कुमारी चौहान ने लक्ष्मीबाई की अनुशंसा में लिखा है–

'खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।'

प्राचीन काल में लड़की का जन्म ऐसी प्रसन्नचित्त वृत्तियों को संजोए हुआ था,जैसे की घर में लक्ष्मी का आगमन हो गया हो।अर्थात लड़की समृद्धि और सम्पदा के प्रतीक के रूप में वंदनीय थी।नारी को जननी के रूप में भी नमन किया जाता था और अर्द्धागिनी कहकर पुरुष के अस्तित्व को भी पूरा किया जाता था।यहां तक की नारी को मां दुर्गा की प्रतिकृति के रूप में पूजा जामता था।परन्तु समय परिवर्तन के साथ मां दुर्गा की प्रतीक नारी पुरुषसत्तात्मक समाज में वेश्या का रूप में परिवर्तित हो गई।परन्तु इतने अश्लील नाम से संबोधित होने पर भी नारी अपने पवित्रता व गरिमा को बनाए हुए है।क्योंकि मां दुर्गा की मूर्ति वेश्या के घर के आंगन से लाई गई मिट्टी से ही पूर्ण होती है।पुरुषसत्तात्मक समाज ने नारी के कंधों पर विभिन्न प्रकार की घरेलू जिम्मेदारियों का बोझ डाल दिया,परन्तु नारी इस बोझ के नीचे न दबते हुए अपनी सामाजिक भूमिका को विस्तारित करती गई।इतना करने पर भी समाज उसे पुरुष के बराबर रखने पर तैयार न हुआ।और समाज का रोष दहेज प्रथा,बलात्कार बाल विवाह,पत्नी को मारना,सती प्रथा,तेजाब फैंकना आदि कुरीतियों के रूप में मुखरित हुआ।जिसका सशक्त उदाहरण 'सत्यमेव जयते' में देख चुके है।प्राचीन काल से आधुनिक काल तक आते–आते जननी,मां दुर्गा,अर्द्धागिनी की प्रतीक नारी अपनी छवि को मलिन होता देख बेबस व लाचारी का प्रतीक बन गई।थामॅस रयूटर ने 2012 में एक सर्वेक्षण के माध्यम से यह अनुमान लगाया कि स्त्रियों की सुरक्षा की दृष्टि से भारत विश्व का 'चौथा खतरनाक देश' है।

इतना होने पर भी स्त्री जाति ने हार नही मानी।उसने शिक्षा का अवलम्बन लेकर अपनी सामाजिक भूमिका को निखारना व विस्तारित करना प्रारम्भ कर दिया।विभिन्न समाज सुधारको जैसे राजा राममोहन राय,स्वामी दयानंद व स्त्री विमर्श ने नारियों की वास्तविक स्थिति पर प्रश्न चिहन लगाया।जब स्त्री को एक मनुष्य के रूप में देखने– पहचानने की शुरुआत हुई तब आँख खुली कि स्त्री तो स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी गुलाम की गुलाम ही रही।तमाम आबहवाओं में,तमाम संस्कृतियों सामाजिक व्यवस्थाओं में,युद्ध में या शान्ति में,हर जगह स्त्री का आक्रमित–शोषित–पीड़ित ही मालूम हुई।घर में,परिवार में,आस पड़ौस में,गांव में,नगर में,खेत में,बाजार में,बैंक में,साहित्यिक पत्रिका में नारी की क्या स्थिति थी,जहाँ–जहाँ खोजा अस्वीकार की ही बू उठी।परन्तु शिक्षा के प्रसार के कारण व स्त्री की सहनशीलता के बांध के टूटने के कारण स्त्री ने अपने अस्तित्व के संरक्षण के लिए कदम बढ़ाना शुरू कर दिया।स्त्री ने स्त्री शब्द को उसके वास्तविक अर्थो में संदर्भित करना प्रारम्भ कर दिया।स्त्री की सजगता,सहृदयता तथा जागृति और उसमें से पैदा होने वाली शक्ति सत्ता अपने महाप्रवाह में किसी को बाहर नहीं रखती,समेट लेती है,समा लेती है,उसी का नाम है स्त्री।स्त्री से ही प्रजीवन शक्ति, संतुलन शक्ति है।वह केवल आबादी बढ़ाने वाला उपकरण नहीं है।स्त्री तो स्वयं प्रकृति है लेकिन दुःख की बात तो यह है कि प्रकृति के विनाश का सबसे पहला शिकार ही स्त्री होती है।पुरुषसत्तात्मक समाज ये भूल गया कि स्त्री–पुरुष एक दूसरे के सृजन के साथी है,इनमें से एक के बिना भी सृजन संभव नही।जैसे सृष्टि सूरज से ही संभव है,उसी तरह जीवन भी स्त्री के होने से ही संभव है,वह जीवन की ऊष्मा का दूसरा रूप है।समाज ने स्त्री के लिए जितनी भी जीवनद्रोही स्थितियां निमित्त की हो पर कुदरत ने उसे अपनी सृजन क्षमता के गुण से नवाजा है।स्त्री को अपनी क्षमता एवं इस वरदान को पहचानना होगा।अनुकूल स्थिति पाकर स्त्री ने अपनी क्षमताओं को विकसित व प्रफुल्लित करना प्रारम्भ कर दिया।उसने अबला से सबला बनने का निणर्य कर लिया व समाज में अपनी एक निश्चित व महत्वपूर्ण स्थान को स्थापित का दृढ़ संकल्प कर लिया है।स्त्री पुरुषसत्तत्मक समाज को यह प्रत्यक्ष कर देना चाहती थी कि अगर ईश्वर यदि इत्तफाक से स्त्री पुरुया की भूमिका में परिवर्तन कर दे तो पुरुष दूसरे दि नही ईश्वर के समक्ष गिड़गिड़ा उटेगा।क्योंकि कोई भी पुरुष स्त्री के जीवन को एक दिन तो क्या एक क्षण के लिए भी जीना नही चाहेगा, क्योंकि स्त्री बनकर उसे झुकना पड़ेगा,सृजन की पीड़ा को सहना पड़ेगा और समझौता करना पड़ेगा।सच तो यह है कि पुरुष हर तरह से स्त्री पर निर्भर होकर भी उसकी भूमिका और महत्व को समझ नही पाता।दरअसल स्त्री उसके लिए आदत है,अस्तित्व नही।पर अब स्त्री जागरूक हो गई है।उसने अपने अस्तित्व की गरिमामय किरणों के प्रकाश को समाज में व्यापक स्तर पर फैलाना कर दिया है।

यह संसार परिवर्तनशील है।यहां प्रत्येक क्षण स्थिति परिवर्तित होती रहती है।नारी वर्ग की स्थिति में भी परिवर्तन का समय आ गया है।अजोका समय आधुनिक नवजागरण का युग है।विश्व भर में नारी अपने सीमाओं को विस्तारित कर अपनी सामाजिक भूमिका को विकासशीलता में मार्ग पर ले के आ रही है।आज की नारी आधुनिक प्रवेश में जीवन यापन करते हुए घर की आन्तरिक जिम्मेदारियों के साथ–साथ बाहरी कत्तव्यों का भी निवर्हन कर रही है।नारी अब अर्थोपार्जन के क्षेत्र में पर्दार्पण करती हुए जहां एक घरेलू बजट संभाल रही है वही पर राष्ट्रीय आय व प्रति व्यक्ति आय में भी अपना योगदान दे रही है।

लिंग विभेदीकरण ने न केवल समाज में स्त्री की दशा को प्रभावित किया, अपितु राष्ट्र की प्रगति को भी प्रभावित किया है।क्योंकि राष्ट्र की प्रगति में स्त्री की भी अहं भूमिका है।नारी जागरण ने नारी को रसोई घर से निकाल कर कम्पयूटर नगरी में पहुँचा दिया है।नारी ने अपने कूल–किनारों को विस्तारित करते हुए समाज में अपनी भूमिका को विकसित किया है।और नारी अस्तित्व को विकास के पथ की ओर अग्रसर किया है।नारी ने औद्योगिक, कृषि , शिक्षा, हस्तकला आदि सभी क्षेत्रों में अपनी भूमिका को प्रमाण व साक्ष्य के साथ प्रस्तुत व स्थापित

किया है।नारी बाहरी क्षेत्रों के साथ–साथ अपनी घरेलू जिम्मेदारियों का निर्वहन बड़ी कुशलता के साथ कर रही है।अर्थात् वह वह घर,परिवार व बच्चों के साथ–साथ नौकरी कर के देश के आर्थिक विकास में भी अपना अहं योगदान दे रही है। बैंकिग, उत्पादन, चिकित्सा ,राजनीति,तकनीकी क्षेत्र,आर्थिक क्षेत्र,राजनीति,पत्रकारिता आदि क्षेत्रों में अपनी भूमिकाओं का विकसित कर अपनी गरिमा को समुज्ज्वल बना रही है।संविधान में भी नारी को बराबरी के अधिकार दिए गए है।स्त्री आज कई स्तरों पर अपनी भूमिका निभा रही है, जबकि पुरुष एक ही आसन पर विराजमान है।नारी आर्थिक तौर पर अपने आप को सुरक्षित करना चाहती थी।क्योंकि उन्होने समय की नब्ज को भली प्रकार से परख लिया था।स्वयं की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए उन्होने शिक्षा का सहारा लिया व बहुपक्षीय विकास करने में समर्थ हुई।आज की नारी केवल सिलाई,कढ़ाई,बुनाई व लघु उद्योगों तक ही सीमित नहीं है। आज की नारी इंजीनियर,विमान चालक से लेकर चांद तक पहुँच गई है।कल्पना चावला भारतीय इतिहास की वह नारी है जो विफल होकर भी अपनी छवि की अमिट छाप छोड़ गई है।अब मैं यहां पर उदाहरण सहित विकासशील नारी की भूमिका की अनुशंसा करना चाहुँगी।

मीराकुमार,लोक सभा की स्पीकर रह चुकी है।सुषमा स्वराज,वर्तमान विदेश मंत्री है अर्थात् एक ऐसा नारी जो सम्पूर्ण विश्व में भारत का चेहरा बनकर भारतीयों का प्रस्तुतीकरण कर रही है।स्मृति ईरानी,वर्तमान शिक्षा मंत्री अर्थात् वह नारी जो सम्पूर्ण भारत की शिक्षा को सुव्यवस्थित करेगी।उमा भारती जल संसाधन मंत्री,मेनका संजय गांधी बच्चों व नारी के विकास मंत्री,हरसिमरत कौर खाद्य मंत्री हैं, इन राजनीतिक चेहरों के इलावा चंदना कोचर,आई. सी. आई. सी. आई बैंक की चेयरपर्सन,शिखा शर्मा,ऐक्सिस बैंक की चेयरपर्सन है।सुनीता विलियम्स एक ऐसी नारी की उदाहरण है जो चांद पर पहुँचने में सफल हुई।स्त्री भूमिका का वर्णन हो तो सर्वप्रथम इंदिरा गांधी का नाम जुबान पर आता है।उन्होने दो बार भारत का प्रधानमंत्री बनकर स्त्री की सामाजिक भूमिका की सशक्त उदाहरण प्रस्तुत की है।भले ही ये कुछेक गिने–चुने नाम है,पर इनके इलावा और बहुत सी नारियां है जिन्होने अपनी भूमिका की सशक्त उदाहरण प्रस्तुत किया है।26 जनवरी की परेड़ का विषय महिला सशक्तिकरण भी नारी की समाज में परिवर्तित व विकासशील भूमिका का चित्रांकन करता है।इस बार परेड़ पर भारतीय जल सेना,थल सेना व वायु सेना की महिलाओं का प्रदर्शन महिला सशक्तिकरण का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है।यहां तक बैराक ओबामा को गार्ड ऑफ ओनर भी एक वायु सेना महिला कमांडर पूजा ठाकुर द्वारा नेतृत्व किया गया।जो कि नारी शक्ति का सशक्त उदाहरण है।

इस प्रकार नारी की विभिन्न क्षेत्रों में सामाजिक भूमिका बढ़ रही है।और स्त्री भविष्य में नव्य उदाहरण प्रस्तुत कर रही है।इतनी व्यापक भूमिका की सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करने के पश्चात भी नारी अभी तक अपने विकास के मार्ग पर अभी भी प्रयत्नरत है।भले ही कुछेक स्त्रियां उच्च पदों पर नियुक्त है,परन्तु यह विकास कुलात्मक स्तर पर नही है,गिना–चुना है।नारी नौकरीपेशा होकर भी अपना उत्तरदायित्व सुचारू रूप से निभा रही है।भले ही आज भी बहुत स्थानों पर नारी शोषण का शिकार है,परन्तु वह दिन दूर नही जब नारी अपनी अस्तित्व की चमक से अपनी सफलता की किरणों को विकीर्ण कर समाज में अपनी भूमिका की अनिवार्यता को प्रमाण के साथ स्थापित करेगी।इतने पर मैं तो नारी की विकासशीलता के विषय में यह ही कह सकती हूँ–

"मैं भी आखिर में नारी हूँ,
नारी का फर्ज निभाऊँगी,
औकात भूलकर कुछ करें आज,
मैं पतन नहीं करवाऊँगी।"

संदर्भ ग्रन्थः–

1––नारी उत्पीड़न समस्या एवं समाधान,डॉ हरिदास राम जी शेण्डे 'सुदर्शन'
2–नारी विमर्श,आधी दुनिया का जलता संविधान, डॉ. बलदेव वंशी,लोकवाणी संस्थान दिल्ली
3–विमर्श के विविध आयाम, अर्जुन चौहान,वाणी प्रकाशन,दिल्ली
4–आदमी की निगाह में औरत, राजेन्द्र यादव

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org